इंगलैण्ड का इतिहास, Paper - II (Hons)
T.D.C. Part - I

Q. जार्ज प्रथम एवं द्वितीय के शासन के संवैधानिक महत्व की विवेचना करें।

Ans → सन् 1688 ई० की गौरवपूर्ण क्रांति के बाद इंगलैण्ड के विधान में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। रानी ऐन की मृत्यु के बाद सोफिया का पुत्र जार्ज प्रथम के नाम से सन् 1714 ई० में इंगलैण्ड का राजा हुआ। इस तरह के इंगलैण्ड में गणतन्त्र की स्थापना का प्रयास किया गया क्योंकि वहाँ एक नये राजवंश का प्रादुर्भाव हुआ था। किन्तु कुछ कारणों से उस समय इंगलैण्ड में गणतंत्र की स्थापना तो नहीं हो सकी थी, किन्तु इसके लिए रास्ता बन कर तैयार हो गया था। उस काल के सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि वहाँ वैधानिक-व्यवस्थाओं की स्थापना हो चुकी थी। इस व्यवस्था में मन्त्रिमण्डल सबसे प्रमुख अंग था और आगे चलकर शासन-विधान का नियंत्रण इसी हाथ में आ गया। जैसा कि Adams महोदय का कहना है कि - "Its most striking feature is institution making .... The new institution was the cabinet, not meaning by the cabinet as a mere institution but the cabinet system of Government."

1.) मंत्रिमंडल का विकास → मंत्रिमंडल प्रथा के विकास में जार्ज प्रथम का शासनकाल सुनहला अवसर माना जाता है। जार्ज प्रथम जर्मनी का रहने वाला था। इसलिये वह अंग्रेजी भाषा को खूब अच्छी तरह नहीं जानता था। वह अपने मंत्रियों के साथ टूटी-फूटी लैटिन भाषा में ही बात-चीत किया करता था। जर्मन होने के कारण स्वभावत: वह जर्मन राजनीति से अधिक प्रेम रखता था। उस समय उसकी उम्र 54

वर्ष की थी। इसलिये वह अपनी पुरानी आदत नहीं छोड़ सकता था जबकि ऐसा करने के लिए कई बार प्रयत्न भी कर चुका था। परन्तु उसको इसमें जरा भी सफलता नहीं मिल सकी।

2.) मन्त्रिमंडल में दोनों राजाओं की अनुपस्थिति → जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय दोनों राजा मन्त्रिमण्डल की बैठकों में बहुत कम उपस्थित होते थे। जिसका परिणाम इन दिनों दोनों राजाओं के लिए बहुत ही बुरा निकला। देश के शासन कार्य संबंधी सभी विषयों पर विचार-विमर्श तो मन्त्रिमण्डल में ही हुआ था। शासन कार्य के सभी निर्णय वहीं हो जाया करते थे। परन्तु इस दोनो राजाओं को सभी निर्णयों से सर्वथा अनभिज्ञ रह जाना पड़ता था जिससे देश की वास्तविक स्थिति का ज्ञान उन्हें नहीं हो पाता था। दूसरी बात यह भी कि उसके मन्त्रियों में भी किसी को जर्मन भाषा का ज्ञान नहीं था जिसके फलस्वरूप वालपोल ही मन्त्रिमण्डल का सभापतित्व करने लगा, क्योंकि प्रथम जार्ज मन्त्रिमण्डल की सभा में जाकर सभापतित्व नहीं किया करता था। वालपोल एक कुशल मन्त्री था। उसे अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त था। अतः वह पार्लियामेन्ट का नेता चुन लिया गया।

3.) प्रधान मन्त्री के स्थान का प्रादुर्भाव → गौरवपूर्ण क्रांति के बाद देश के सभी कानूनों और करों पर पार्लियामेन्ट का नियन्त्रण कायम हो गया था। इतना हो जाने के बावजूद सभी शासकों ने अपना शासन-कार्य खुद किया था। जैसा कि विलियम तृतीय अपने सभी मंत्रियों को चुना करता था और उन सबों पर निगरानी भी रखा करता था। रानी ऐन भी सभी मंत्रियों को चुना करती थी और कैबिनेट की सभा में जाकर सभापतित्व भी किया करती थी। परन्तु जार्ज प्रथम एवं जार्ज द्वितीय ने देश का वास्तविक ज्ञान नहीं रहने के कारण ...

मन्त्रिमण्डल की बैठक में जाना छोड़ दिया था। किन्तु अभी तक प्रधानमंत्री को मन्त्रिमण्डल के मंत्रियों के चुनाव में पूरी स्वतंत्रता नहीं मिली थी। दोनों जार्ज ने भी कुछ मन्त्रियों को चुना था।

4.) मन्त्रियों का उत्तरदायित्व → अब मन्त्रिमण्डल में ही देश की शासन नीति का निर्धारण होता था। शासन का कौन कार्य होना चाहिए और कौन नहीं, इसे निश्चित करने का अधिकार राजा के हाथ से निकलकर मन्त्रियों के हाथ में चला गया जिसके फलस्वरूप प्रायः शासन के सभी कार्य मन्त्रिमंडल के हाथ में आ गये। अब राजा अपने मंत्रियों के साथ से शासन करने लगा जिससे मन्त्रिमंडल में सामूहिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत आया। अतः दोनों जॉर्ज ने स्वेच्छाचारी रहने पर भी देश के नियमानुमोदित शासन का कभी उल्लंघन नहीं किया।

5) कैबिनेट प्रणाली के पूर्ण विकास में कमी → प्रथम दोनों जार्जों के शासन काल में इस क्रांतिकारी परिवर्तन के बाद भी मन्त्रिमण्डल प्रणाली का पूर्ण रूपेण विकास नहीं हो सका था। अतः मंत्रिमण्डल प्रणाली की सभी बातें इस काल में प्रचलित होना मान लेना सर्वथा भूल है।

6) कॉमन्स सभा का विकास → जार्ज प्रथम तथा द्वितीय के शासन-काल में मन्त्रिमण्डल के विकास के साथ उनके शासनकाल में कॉमन्स-सभा की भी प्रधानता बहुत बढ़ गई। इस काल में शासन के सभी कार्य राजा के हाथों से निकल कर धीरे-धीरे मंत्रिमण्डल के हाथों में आ गये थे; लेकिन मंत्रिमण्डल तो कॉमन सभा पर ही आधारित थी। इसीलिए कैबिनेट प्रणाली के विकास से कामन्स सभा काफी प्रभावित हुई। कामन्स सभा का महत्त्व

इंगलैण्ड का इतिहास, Paper-II

और प्रभाव काफी बढ़ गया।

7.) कामन्स सभा के पूर्ण विकास में कमी → देश में उस समय कामन्स सभा की प्रधानता तो हो गई थी परन्तु देश में पूर्णरूप से गणतंत्रात्मक प्रणाली का विकास नहीं हो सका था। कामन्स सभा की प्रधानता को व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सका था। उसकी प्रधानता की बात तो केवल सिद्धांत मात्र थी।

8.) विगों की प्रभुता → दोनों जार्जों के शासनकाल की एक संवैधानिक विशेषता यह भी है कि इस काल में विगों की शक्ति अधिक बढ़ गई थी। विगों का शासन प्रमुख रूप से दो बातों पर आधारित था। पहली बात थी राजा पर विगों का दबाव और दूसरी बात थी पार्लियामेंट पर नियंत्रण। जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय को विग मंत्रिमंडल के ऊपर निर्भर रहने के अलावा और दूसरा कोई उपाय नहीं था क्योंकि टोरी स्टूअर्ट वंश को फिर से स्थापित करना चाहता था। हैनोवर वंश के प्रथम दोनो शासक इस बात से पूर्ण परिचित थे। इसलिए ये लोग टोरियों से सतर्क रहा करते थे और शासन कार्य विगों के हाथ में सौंप दिये थे।

9.) टोरियों की बुरी दशा :→ इस तरह से लगभग 50 वर्षों तक इंगलैण्ड पर विगदल का एकाधिपत्य कायम रहा क्योंकि जार्ज प्रथम एवं जार्ज द्वितीय के समय उन लोगों को अपनी सम्पत्ति, उत्तम प्रबंध और राजाओं के समर्थन प्राप्त थे। लेकिन उस समय टोरीदल की हालत एकदम खराब थी। टोरीदल के सभी सदस्य या नेता राजद्रोही थे। इसलिए साधारण अंग्रेज उन लोगों का समर्थन नहीं करते थे क्योंकि उन सबों को भय था कि टोरीदल के लोग देश में कैथोलिक मत का फिर से प्रचार कर देंगे।

JANUARY 2021

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

T.D.C Part - I , Paper - II

इस तरह से देश में टोरियों की शक्ति कमती जा रही थी और देश में विगों की तूती बोलने लगी थी। विगदल के बाद में चलकर वालपोल और पिट जैसे सुयोग्य प्रधानमंत्री को जन्म दिया। जिन्होंने विगदल की शक्ति को और भी सुदृढ़ कर दिया।

वैदेशिक नीति → जार्ज प्रथम और जार्ज द्वितीय के शासनकाल की वैदेशिक नीति भी घरेलू नीति की तरह महत्वपूर्ण है। हैनोवर वंश में दोनों शासक पहले जर्मनी के ऐलेक्टर थे। जर्मनी उस समय एक शक्तिशाली देश था। इस देश के अधिकार में उत्तरी समुद्र के बहुत से बन्दरगाह भी थे। जार्ज प्रथम एवं जार्ज द्वितीय को जर्मनी से विशेष प्रेम था क्योंकि जर्मनी के स्वार्थ की रक्षा के लिए वे लोग अधिक प्रयत्नशील थे। जर्मनी के स्वार्थों की रक्षा करना ही दोनों शासकों की वैदेशिक नीति का एकमात्र उद्देश्य था।

विगदल के प्रमुख का दूसरा स्तम्भ था पार्लियामेंट पर अधिकार तथा नियंत्रण। पहले से ही उनका House of Lords में बहुमत था और बाद में चलकर वे लोग House of Commons में भी बहुमत प्राप्त करने में सफल हो गये। इसप्रकार दो जॉर्ज शासकों के अन्तर्गत संवैधानिक प्रगति हुई।

Dr. Digambar Jha (Guest Prof.)
Dept. of History, S.R.A.P.
College Bara Chakiya (E.C.)